पूज्य बहिनश्री जन्म जयंती विशेषांक

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. २५/-

August - 2026

स्वानुभूतिप्रकाश



प्रकाशक :
श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट
भावनगर - ३६४ ००१.

अहो!!
आराधनाकी देवी
पूज्य बहिनश्री चंपाबहिन की ११३वीं मंगलकारी
जन्मजयंती महोत्सव प्रसंग पर शत शत वंदन



पूज्य बहिनश्रीकी असाधारण शक्ति!!

...बहिनश्रीका grasping कैसा था मालूम है? एक घंटेका प्रवचन सुना हो उसे घर आकर पूरा लिख लेते थे। शुरूसे ऐसा grasping! उनका starting ही ऐसा था। 'गुरुदेवश्री' मिले और उनके व्याख्यान सम्बन्धित उनका जो रस था, श्रवण विषयक उनका जो रस था, इतना ही नहीं क्षयोपशमका इसे जो साथ मिला वह ऐसा कि घर आकर पूरा प्रवचन लिख लेते थे। उन्होंने व्याख्यान हॉलमें बैठे–बैठे प्रवचन नहीं लिखे। 'समयसार' पर प्रवचनके पाँच भाग जो प्रकाशित हुए हैं वे उन्होंने उन दिनों घर आकर पूरे लिखे हुए हैं। सारे न्याय इसमें आ जाते और वह भी 'गुरुदेवश्री'का मर्म पकड़–पकड़ कर। उतना सुंदर grasping था उनका किसीको पता भी न चले। क्योंकि ज्यादा बोलते नहीं थे। इसलिये उनके क्षयोपशम बाबत किसीको पता नहीं था। अल्पभाषी थे इसलिये क्षयोपशमका किसीको पता न चले। ज्यादा बोलनेवालेके लिये किसीको ऐसा लगे कि इनको तो काफ़ी ज्ञान लगता है। जबकि इनकी गंभीरता बहुत थी। केवल ज्ञान ग्रहण नहीं करते थे परंतु ज्ञानको आत्मसात् कर चुके थे। यह इनकी बहुत बड़ी शक्ति थी। ज्ञानको आत्मसात् करनेकी, जीवनमें उतार लेनेकी बहुत बड़ी शक्ति थी।

– पूज्य भाईश्री शशीभाई

स्वानुभूतिप्रकाश

वीर संवत्-२५५२, अंक-३४४, वर्ष-२८, अगस्त-२०२६

'धन्य अवतार' प्रशममूर्ति भगवतीमाता प्रति पूज्य गुरुदेवश्रीके प्रमोदपूर्ण हृदयोद्गार!!





यह तो बहिनके अन्तरके वचन हैं न! बहिनकी भाषा सादी, किन्तु अंतरकी है। अनुभव विद्वत्ता नहीं चाहता, अंतरकी अनुभूति एवं रुचि चाहता है। यह जो बहिनके शब्द हैं वे भगवानके शब्द हैं। भाषा भी नयी और भाव भी नये! सादी भाषामें अन्दर रहस्य है। लाखों पुस्तकें छप चुकी हैं, मैंने कभी कहा नहीं था; जब यह (वचनामृत) पुस्तक हाथमें आयी (देखी-पढ़ी) तब रामजीभाईसे कहा - भाई! यह पुस्तक एक लाख छपाओ।

*

(बहिनश्रीके वचनामृत) पुस्तक समय पर बाहर आई। बहिनको कहाँ बाहर आना ही है, किन्तु पुस्तकने बाहर ला दिया। भाषा सरल है किन्तु भाव बहुत गंभीर हैं। मैंने पूरी पुस्तक पढ़ ली है। एक बार नहीं किन्तु पच्चीस बार पढ़ ले फिर भी सन्तोष न हो ऐसी पुस्तक है। यह दस हजार पुस्तकें छपवाकर सब हिन्दी-गुजराती 'आत्मधर्म' के ग्राहकोंको भेंट दी जाएँ ऐसा मुझे लगा।

*

परिणमनमेंसे निकले हुए शब्द हैं। बहिनको तो निवृत्ति बहुत। निवृत्तिमेंसे आये हुए शब्द हैं। पुस्तकमें तो समयसारका सार आ गया है - अनुभवका सार है; परम सत्य है। 'वचनामृत' वस्तु तो ऐसी बाहर आ गई है कि इसे हिन्दुस्तानमें सब जगह प्रगट करना चाहिये।



*

यह बहिनके वचन हैं वे अनंत ज्ञानियोंके वचन हैं। इन्द्रोंके समक्ष इस समय श्री सीमंधरदेव जो कह रहे हैं वही यह वाणी है। यह पुस्तक साधारण नहीं है, इसमें तो बहुत कुछ भरा है। भाषा मीठी है, सादी है; भाव गहरे और गंभीर हैं। दिव्यध्वनिका यह आवाज है। अरे! एक बार मध्यस्थरूपसे इसे पढ़े तो सही! भगवानकी कही हुई जो ॐकार ध्वनि है उसमेंसे निकला हुआ यह सार बहिनने कहा है।

*

इस कालका योग अनुकूल है; बहिन जैसोंका इस काल अवतार है। अरे! धर्मात्मा गृहस्थसे भेंट होना भी अनंत कालमें कठिन है। भाइयोंको इस काल धर्मात्मा पुरुष मिल जायें, परन्तु इस कालमें बहिनोंके भी सद्भाग्य हैं।

*

बहिनसे बोला गया अन्तरमेंसे। वहाँसे (विदेहक्षेत्रसे) आयी हुई बात है। बहिन वहाँसे आयी हैं।....बहिन (लड़कियोंके सामने) बोलीं और लिखा गया, नहीं तो बाहर आता ही कहाँसे? (यह सब) खोदना है पत्थरमें (संगमरमरके पटियोंमें)।

*

यह तो बहिन की भाषा बिल्कुल सादी और अन्तर से बोली गयी है। यह तो जरा बोलीं और लिखा गया, नहीं तो बाहर आये ही कहाँ से? अकेले रतन भरे हैं। अन्यमती को भी ऐसा लगे कि ऐसा तो कहीं नहीं है। हीरों का भण्डार है!

*

यह बहिनके वचन हैं। अंतर आनन्दके अनुभवमेंसे आयी हुई बात है। बहुत जोर है अंतरका, अप्रतिहत भावना। आत्माका सम्यग्दर्शन और अतीन्द्रिय आनन्दकी अनुभूति – उसमेंसे यह बात आयी है। आनन्दके स्वादमें मुरदेकी भाँति चलती हैं। अहाहा! सच्चिदानन्द प्रभु हैं बहिन! अंतरकी महत्ताके सामने बाहरका कुछ लक्ष्य ही नहीं है। अनुभवी, सम्यक्त्वी, आत्मज्ञानी हैं। आत्माका अनुभव तो है परन्तु साथ ही असंख्य अरब वर्षोंका जातिस्मरणज्ञान है। परन्तु लोगोंको बैठना कठिन पड़े।

*

बहिन (चंपाबेन) तो जैनकी मीरांबाई हैं।....भान सहितकी भक्ति है, अंधी दौड़ नहीं है।

*

वचनामृतके एक-एक बोलमें, एक-एक शब्दमें निधान भरे हैं। जिसे तल पकड़ना आता हो उसे अगाधता लगे स्वभावकी। पर्यायने प्रभुका संग्रहण किया, पूरा ज्ञानमें ले लिया। यह तो सिद्धान्तका दोहन है। जगतके भाग्य कि यह (बहिनकी पुस्तक) समय पर बाहर आ गई। थोड़े

शब्दोंमें, सादी भाषामें, मूल तत्त्वको प्रगट किया।

*

चम्पाबेन सचमुच अजोड़ रतन हैं; वे तो अन्तर से बिल्कुल उदास हैं; उन्हें बाहर का यह सब कुछ नहीं रुचता; परन्तु लोगों को तो भक्तिप्रेम से बहुमान करने के भाव आयें न!

*

बहिन तो महाविदेहसे आयी हैं। उनके अनुभवकी यह (वचनामृत) वाणी है। हीरोंसे सन्मान किया तब भी उन्हें कुछ नहीं। बहिन तो (थोड़े भवमें) केवलज्ञानी होंगी।



*

वचनामृत के एक-एक शब्द में पूरा सार भरा है। विचार को दीर्घरूप से लम्बाकर अन्तर में जा। आहाहा! बहिन की (चम्पाबेन की) कैसी स्थिति है! कहते हैं - 'आत्मा' बोलना सीखे तो यहाँ से (-गुरुदेव के पास से)! गजब है उनकी विनय और नम्रता!

*

बहिनको खबर नहीं कि कोई लिख लेगा। उन्हें बाह्य प्रसिद्धिका जरा भी भाव नहीं। धर्मरतन हैं, भगवती हैं, भगवतीस्वरूप माता हैं। (उनके यह वचन) आनन्दमेंसे निकले हैं। भाषा मीठी आ गयी है।

*

बहिन अभी तक गुप्त थीं। अब ढँका नहीं रहेगा - छिपा नहीं रहेगा। उनके वचन तो भगवानकी वाणी है, उनके घरका कुछ नहीं है- दिव्यध्वनि है। बहिन तो महाविदेहसे आयी हैं। यह वचनामृत लोग पढ़ेंगे, मनन करेंगे, तब ख़्याल आयेगा कि यह पुस्तक कैसी है! अकेला मक्खन है।

*

(बहिनकी) यह वाणी तो आत्माके अनुभवमें-आनन्दमें रहते-रहते आ गयी है। हम भगवानके पास पूर्वभवमें थे। बहुत ऊँची बात है। इस समय यह बात और कहीं नहीं है। बहिन (चंपाबेन) तो संसारसे मर गयी हैं। अपूर्व बात है बापू!

*

बहिनकी पुस्तक तो ऐसी बाहर आ गई है कि मेरे हिसाबसे तो सबको भेंट देना चाहिये। बहुत सादी-बालक जैसी भाषा; संस्कृत भाषा नहीं। बहुत ज़ोरदार गंभीर बातें उसमें हैं।

*

बहिनकी पुस्तकमें बहुत संक्षिप्त और माल-माल है। अन्यमतियोंको भी पसन्द आये ऐसा है।....अरे! उसमें तो तेरी महिमा और बड़ाईकी बातें हैं। मुनियोंकी कैसी बात ली है!-'मुनियोंको बाहर आना वह बोझ लगता है।' यह पुस्तक बाहर आई सो बहुत ही अच्छा हुआ। अंदर थोड़ेमें बहुत सी बातें हैं।

*

बहिन तो एक अद्‌भुत रतन पैदा हुई हैं। शक्ति

अद्‌भुत है। अतीन्द्रिय आनन्दके वेदनमें उन्हें (बाहरकी) कुछ पड़ी ही नहीं। हिन्दुस्तानमें उनके जैसा कोई आत्मा नहीं है। यह पुस्तक बाहर आई इसलिये कुछ खबर पड़ती है।

*

चंपाबेन अर्थात् कौन?! उनका अनुभव, उनका ज्ञान, समता अलौकिक है।....स्त्रीकी देह आ गई है। परन्तु अंतरमें अतीन्द्रिय आनन्दकी मौजमें पड़ी हैं; उसमेंसे वाणी निकली है।-यह, उनकी वाणीका प्रमाणपना है।



*

बहिनके वचनामृत यह तो केवलज्ञानकी बारह-खड़ी है। दो-चार बार नहीं किन्तु दस बार पढ़े तब समझमें आये।

*

बहिनकी (चंपाबेनकी) तो क्या बात करूँ! उनकी निर्मल द्रष्टि और निर्विकल्प स्वात्मानुभूति इस कालमें अजोड हैं। वे तो अंतरसे ही उदास-उदास हैं। उनके सम्बन्धमें विशेष क्या कहूँ? मेरे मन तो वे भारतका धर्मरतन, जगदम्बा, चैतन्यरत्न, धर्ममूर्ति हैं, हिन्दुस्तानका चमकता सितारा हैं।

*

यह (वचनामृत) पुस्तक ऐसी आयी है कि चाहे जितने शास्त्र हों, इसमें एक भी बात बाकी नहीं है। थोड़े शब्दोंमें द्रव्य-गुण-पर्याय, व्यवहार-निश्चय आदि सब आ गया है। जगतके भाग्य कि ऐसी सादी भाषामें पुस्तक बाहर आ गई। वीतरागताके भावका रटन और घोटन है। सारे हिन्दुस्तानमें ढिंढोरा पिटेगा। ज्यों ही पुस्तक हाथमें आयी त्यों ही कहा कि एक लाख पुस्तकें छपना चाहिये।

*

यह कथा-कहानी नहीं, भागवत कथा है। परमात्माकी वाणीके इशारे हैं। उनका अनुभव करे उसे खबर पड़े। ...बहिन तो भगवती माता हैं।

*

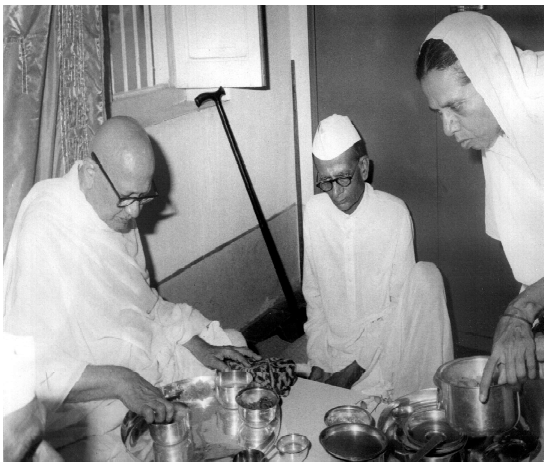
अरे! यह जीव (बहिनश्री चंपाबेन) तो कोई अलौकिक है! अधिक बोलती नहीं इसलिये कुछ नहीं है ऐसा नहीं है। यह तो गंभीर द्रव्य है!

इनका पुरुषार्थ तो इतनी प्रबलतासे उछल रहा है कि यदि वह पुरुष होतीं तो कबकी मुनिदीक्षा लेकर वनजंगलमें चली जातीं, यहाँ दिखती भी नहीं; क्या करें, स्त्रीका शरीर है!

...जिस प्रकार मालामें मनकोंका मेर होता है उसी प्रकार यह तो समस्त मंडलकी-मनकोंकी मेर हैं! इन्हींसे मंडलकी शोभा है। इनसे तो सब नीचे, नीचे और नीचे ही हैं।

*

बहिनको (चंपाबेनको) तो चार भवका ज्ञान (जातिस्मरण) है। असंख्य अरबों वर्षका ज्ञान है इन्हें। यह तो कोई अलौकिक आत्मा है। चंपाबेनकी शक्ति तो गजब है। नरम नरम नरम हैं। स्त्री-शरीर है परन्तु कहीं स्त्री शरीर थोड़ा ही बाधक होता है? ३४ वर्ष हो गये हैं उन्हें ज्ञान प्रगट हुए।



स्त्रियोंमें धर्मरतन हैं।

*

बहिन (बहिनश्री चंपाबेन) तो आराधनाकी देवी हैं। पवित्रतामें सारे भारतमें अजोड़ हैं। उनकी छत्रछाया सारे सोनगढ़में है। ओहो! बहिन तो भगवतीस्वरूप हैं। तुझे और कहाँ ढूँढ़ने जाना है? उनके दर्शन कर न! एक बार भावसे जो उनके दर्शन करेगा उसके अनन्त कर्मबंधन ढीले हो जाएँगे। उनके चरणोंसे जो लिपटा रहेगा उसे भले ही सम्यग्दर्शन न हो, तत्त्वका अभ्यास न हो, तो भी उसका बेड़ा पार है।

*

चंपाबेन तो इस कालका आश्चर्य हैं।

*

आज बहिनका जन्मदिन है न!.... सबको कितना उल्लास दिखायी देता है; उन्हें कुछ है? अध्यात्ममें उनकी स्थिति उदास, उदास एवं स्थिर है।

*

(पृष्ठ संख्या १७से आगे...)

वह क्षोभ अभी योग्य है।

क्रोधादि अनेक प्रकारके दोषोंके परिक्षीण हो जानेसे, संसारत्यागरूप दीक्षा योग्य है, अथवा तो किसी महान पुरुषके योगसे यथाप्रसंग वैसा करना योग्य है। उसके सिवाय अन्य प्रकारसे दीक्षाका धारण करना सफल नहीं होता। और जीव वैसी अन्य प्रकारकी दीक्षारूप भ्रांतिसे ग्रस्त होकर अपूर्व कल्याणको चूकता है, अथवा तो उससे विशेष अंतराय आये ऐसे योगका उपार्जन करता है। इसलिये अभी तो आपके उस क्षोभको योग्य समझते हैं।

आपकी इच्छा यहाँ समागममें आनेकी विशेष है, इसे हम जानते हैं, तथापि अभी उस योगकी इच्छाका निरोध करना योग्य है, अर्थात् वह योग होना अशक्य है; और इसकी स्पष्टता पहले पत्रमें लिखी है, उसे आप जान सके होंगे। इस तरफ आनेकी इच्छामें आपके बुजुर्ग आदिका जो निरोध है उस निरोधका अतिक्रम करनेकी इच्छा करना अभी योग्य नहीं है। हमारा उस प्रदेशके पाससे कभी जाना-आना होगा तब कदाचित् समागमयोग होने योग्य होगा, तो हो सकेगा।

मताग्रहमें बुद्धिको उदासीन करना योग्य है, और कभी तो गृहस्थाधर्मका अनुसरण करना भी योग्य है। अपने हितरूप जानकर या समझकर आरंभ-परिग्रहका सेवन करना योग्य नहीं है, और इस परमार्थका वारंवार विचार करके सद्ग्रंथका पठन, श्रवण, मननादि करना योग्य है। यही विनती।

निष्काम यथायोग्य।

*

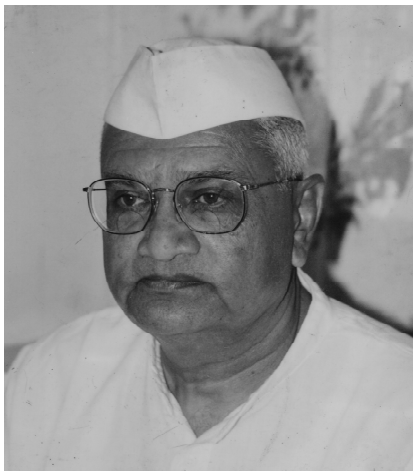
संगका विवेक

बहिनश्रीके वचनामृत, बोल-२२९ पर प्रवचन

दि. २५-११-१९८७, प्रवचन क्र.-१८४

- सौम्यमूर्ति पूज्य भाईश्री शशीभाई

(गतांकसे आगे...)



यह बहुत सुंदर विषय लिया है। कोई इधर-उधरकी बात नहीं की। एकदम मार्मिक बात ली है। तेरे चैतन्य तत्त्वको निहारनेकी जो परिणति, (वह) ज्ञानका विषय लिया है। निज चैतन्यको निहारनेकी परिणति। विषयको थोड़ी ज्यादा सूक्ष्मतासे लेवे। स्वभावको ज्ञानमें देखना है तो ज्ञानमें स्व-पने ज्ञान अपना वेदन करे, ज्ञान स्वयंको स्व-पने वेदनमें ले ऐसा ज्ञानमें ज्ञानस्वभाव है। जबतक ज्ञानका ऐसा स्वयंका वेदनरूप स्वभाव हमें लक्ष्यमें न आये, समझमें न आये, पहचानमें न आये, ख़्यालमें न आये, पकडमें न आये तबतक हमें उस विषयमें सूक्ष्मरूपसे गहराईमें जाकर, इसी विषयमें हमें प्रयत्न-अभ्यास या इसका सूक्ष्म दृष्टिसे अवलोकन करते रहना चाहिये। स्वभाव क्या है? एकबार स्वभाव जो है वह स्वभाव, स्वभावके रूपमें लक्ष्यगत् हो गया तो पूरी परिस्थिति बदल जायेगी, दिशा बदल जायेगी। पहली बात इसकी दिशा बदल जायेगी, दिशा बदलेगी तो हमारा निज चैतन्यको निहारनेका अवसर, अभेदरूपसे निहारनेका मतलब अभेदरूप अनुभव करनेका अवसर आये बिना रहेगा नहीं।

मुमुक्षु :- काम सिर्फ निहारने का ही है।

पूज्य भाईश्री :- बस! निजको निहारने जितना ही कार्य है। इससे ज़्यादा कोई काम नहीं। निज भी तैयार है, निहारनेवाला भी है। सिर्फ निहारने जितना काम है। एकबार हमें अपने कार्यके लिये उत्साहित होकर, स्वकार्यका उत्साह लाकर इस कार्यका शुभारंभ करना चाहिये। आगे बढ़ना चाहिये और उस रास्ते पर चढ़ जाना चाहिये। (थोड़ा सा) करके छोड़ देनेकी बात नहीं है परंतु उस रास्ते पर निकल पड़ो तो उस रास्तेमें आगे ही आगे बढ़ते जाओगे।

मुमुक्षु :- यहाँ परिणति शब्दका प्रयोग है।

पूज्य भाईश्री :- हाँ, 'परिणति' बहुत मार्मिक बात ली है।

'अचानक आ पड़े असत्संगमें...' एक-एक शब्दमें बहुत बातें भरी हैं। कोई बेबुनियादी बात नहीं है। *'अचानक आ पड़े असत्संगमें तो स्वयं पुरुषार्थ रखकर अलग रहे...'* चलाकर आ जाये। ऐसे कोई पुराने रिश्तेदार या परिचित हो उसको लगे कि आज तो कैसे भी इसके घर जाना है और उनके

साथ बैठना है–ऐसे आ जाये कोई। सिर्फ आ जाये नहीं परंतु उनके रसके विषयमें बातें भी शुरू कर दें। तब स्वयं जागृत रहें। आनेवालेका रस कितना भी हो, हमें इसमें कोई मज़ा आये या रस आ जाये ऐसा है नहीं। उस वक्त उसके साथ घुलमिल कर एकाकार हो जाये – ऐसा नहीं। भिन्न रहे। खुद इससे दूरी बनाए रखे। अभी तो ऐसे हँसी–मज़ाक और ठिठोलीके विषय बहुत हैं परंतु हमें इसमें कहीं रस न आये और तो और हमें खेद होना चाहिये कि मेरा वक्त बिगड़ रहा है, मेरा समय जो है बिगड़ रहा है। अपने समयकी बरबादी होने पर इसका खेद होना यह भी एक पात्रताका चिन्ह है और इसका खेद नहीं होकरके खुद समय व्यर्थ गवाँ दे तो इसमें पात्रता नहीं है, यह स्पष्ट होता है। अतः अचानक आ पड़े मतलब सामनेसे आ गया हो ऐसे असत्संगसे भी दूरी बनाए रखें, उदास रहें और इसके लिये सतर्क रहें, भिन्न रहनेका पुरुषार्थ जारी रखें। इसके बजाय स्वयं ही रसपूर्वक असत्संग करेगा तो इसकी परिणति मंद पड़ जायेगी। अतः खुद रस न ले।

यह विषय तो 'श्रीमद्जी' ने लिया ही है कि दीर्घकाल पर्यंत वैराग्य समेत सत्संगकी उपासना की हो तो भी अल्पकालमें वही जीव असत्संगमें रस लेगा तो सारी बातें धुल जाती हैं। नष्ट हो जाती हैं। किया कराया सब पानी। छः बारह महीने तक सत्संगमें रहा हो सब एक हफ्तेभरमें (असत्संगमे) साफ! जैसे कोई आदमी सारी जिंदगी कमाया हो वह जुएके एक ही दाँवमें सारी कमाई साफ करने जैसा विषय है। जुएके जैसा विषय है। *'परंतु स्वयं रसपूर्वक यदि असत्संग करेगा तो अपनी परिणति मंद पड़ जायेगी।'* यानी कि अवश्य नुकसान होगा, होगा और होगा ही। वह नुकसानमें आ जायेगा।

'यह तो स्वरूपमें झूलते हुए मुनियोंको (आचार्यदेवकी) सीख है।' मूलमें तो कुंदकुंदाचार्यने यह बात की है कि हे मुनि! तू संगका ख़्याल रखना। मुनियोंको ऐसी सीख है मतलब? अगर मुनिदशामें आये हुए जीवको भी आचार्य महाराज सावधान करते हैं, क्योंकि आचार्य गुरुके स्थानमें हैं, भले ही दोनों छठ्ठे–सातवें गुणस्थानवर्ती हैं परंतु आचार्य स्वयं गुरु स्थानमें हैं अपना शिष्य मुनि छठ्ठे–सातवें गुणस्थानमें झूल रहा है तो भी उसे सीख देते हैं कि देख भाई! यह संगका विषय है वह बहुत महत्वका है। सिर्फ जघन्य कोटिके जीवोंके संगका महत्व है और तू तो मुनि बन गया और तेरी शक्ति काफ़ी बढ़ गई इसलिये तुझे आपत्ति नहीं है – ऐसा हम तुझे नहीं कहते। (फिर) मुमुक्षुको तो कहना ही क्या? वह तो अभी कमज़ोर है। जब आचार्यदेव मुनियोंको इतनी सीख देते हैं – वाक्यरचना यों है कि, मुनिदशा पर्यंत जीवको भी अगर यह सूचना इसका महत्व और गंभीरता देखकर दी जाती है तो दूसरोंको – निम्नकक्षावालोंको तो संगके विषयमें अपने आप समझ लेनेकी बात है।

'निश्चय–व्यवहारकी संधि ही ऐसी है।' यह निश्चय–व्यवहारकी संधिका विषय है। मार्गदर्शनका जो प्रकरण है वह अनेक पहलुओंसे, चारों पहलुओंसे कहो या सर्व पहलुओंसे विषयको इतना स्पष्ट किया है कि जीव कहीं भी मार्गसे च्युत न होवे और मार्गमें टिका रहे ऐसे हेतुपूर्वक विषय स्पष्ट हुआ है। – इसको मार्गदर्शन कहते हैं। कि कहीं भी गलती न कर बैठे। जितने भी भूलनेके ठिकाने हैं, गिरनेके ठिकाने हैं और जो कहना सम्भव हो, बताना सम्भव हो, विस्तार करना सम्भव हो वे सारे

करीब-करीब बताते जा रहें हैं। ज्ञानीको इस प्रकारका विकल्प आना चाहिये। ज्यों-ज्यों विकल्प आये त्यों-त्यों दिखाते जाते हैं कि, यहाँ ध्यान रखना, यहाँ ध्यान रखना, इधर भी ध्यान रखना, ऐसे-ऐसे प्रसंग भी आ जायेंगे तो इसमें तू ध्यान रखना।

इसमें लिया न! २१५ हमारा चल गया न! *'मुमुक्षुजीव शुभमें लगता है परंतु अपनी शोधकवृत्ति बह न जाय...'* शुभप्रसंग आयेंगे, पंचकल्याणक आदि प्रसंग आयेंगे, अनेक प्रकारके धार्मिक महोत्सव मनानेका होगा, धार्मिक प्रचारके, तत्त्वप्रचारके प्रसंग भी आयेंगे, अनेकों प्रसंग आयेंगे। शुभमें जुड़ना होगा परंतु भीतरमें अपनी आत्माको खोजना है और वह खोज अभी करना बाकी है-यह बात रखकर सब है। जैसे कोई हज़ार बातें करे परंतु जिसका कलेजा ठिकाने पर है वह किसी की बातमें नहीं आता और भ्रमणामें नहीं आता। यह तो बात है, अपन अपना कलेजा ठिकाने पर रखें। इस प्रकार अनेक प्रसंगोंमें अंतरखोजका कलेजा जिसका ठिकाने है वह अनेक शुभ प्रसंगमें प्रवर्तन करे, क्योंकि नहीं होगा ऐसा नहीं बनेगा, क्योंकि शुभ और अशुभ दो ही हैं जीवके पास। अब अशुभमें तो जाना नहीं है। परंतु जो भी है अंतरखोज रखकर बात है। उसे छोड़कर कोई बात नहीं, यह लक्ष्य छोड़कर कोई बात नहीं है।

मुमुक्षु :- सच तो इसमें रस...

पूज्य भाईश्री :- सीधी बात है। मंद रससे प्रवृत्ति होगी वरना पूरा-पूरा समर्पित हो जायेगा, डूब जायेगा पूरा का पूरा। सो तो है ही। स्वाभाविक बात है।

दूसरा कि शास्त्रमें से तुझे अपने शुद्धात्माका स्वरूप दिखाया जाता है। सर्वथा शुद्ध है, पूर्ण शुद्ध है, त्रिकाली शुद्ध है, अशुद्धता बिलकुल नहीं है, अशुद्धताकी गंध भी इसमें नहीं है। और मैं शुद्ध हूँ ऐसा ही अनुभव कर, ऐसी प्रतीति कर, ऐसे निहार, ऐसे अवलोकन कर, ऐसा अपनेको जानो, इसीमें स्थिरता कर! ऐसी ही ज़ोर-ज़ोरसे बात आयेगी। तो क्या स्वच्छंद नहीं हो जायेगा? तू अपनी पर्यायकी अशुद्धताको बिलकुल भूल जा और स्वच्छंद हो जाये ऐसा प्रकार नहीं आ जाना चाहिये। यहाँ तो मार्गसे तनिक भी इधर-उधर हो जाये और मार्ग छूट जाये - तो ऐसा मार्गदर्शन नहीं है। उसे न छोड़ दे - इसका नाम मार्गदर्शन है। सब बातें की हैं।

मुमुक्षु :- निश्चय-व्यवहारकी संधि है।

पूज्य भाईश्री :- निश्चय-व्यवहारकी संधि होती है। निश्चयका स्वरूप, अवलंबनके योग्य ऐसा निश्चयका स्वरूप और ऐसे अवलंबन सहित निकलती ज्ञानियोंकी वाणी ज़ोर-ज़ोरसे आयेगी परंतु निश्चय-व्यवहारकी संधियुक्त उनके परिणाम होते हैं, हमारे परिणाममें भी सहज वैसा प्रकार उत्पन्न होना चाहिये, वरना गड़बड़ी होनेमें देर नहीं लगेगी। चारों पहलुओंसे मार्गदर्शनकी बहुतसी बातें आयी हैं।

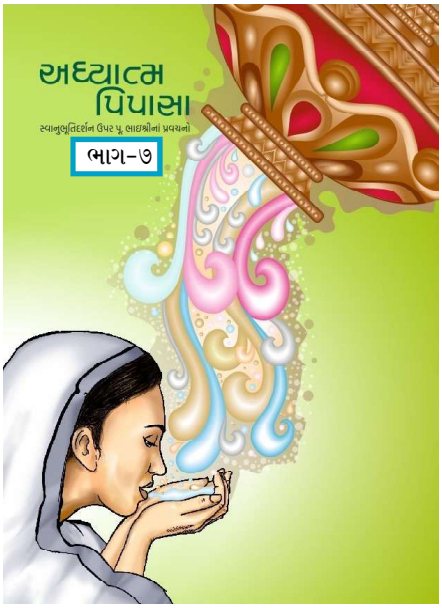
जब स्वाध्याय चलता होगा तब तो कितनी बातें आयी होंगी! यहाँ तो विषय मर्यादामें आता है। जितना पकड़में आया हो उतना आया है वरना और भी बहुत चलता होगा। ऐसा नहीं लगता? कितना

-कितना विषय चलता होगा!!

'निश्चय-व्यवहारकी संधि ही ऐसी है। इसप्रकार अपनी भूमिकानुसार सबको...' जिसकी जैसी... क्योंकि मुमुक्षुमें भी अनेक कोटिके मुमुक्षु होते हैं, अनेक प्रकारकी योग्यतावाले हैं। एक जैसी योग्यतावाले सारे मुमुक्षु नहीं होते तो जैसी जिसकी योग्यता हो उसे अपने हितका लक्ष्य रखकर *'समझ लेना है।'*

(पृष्ठ संख्या १८से आगे...)

कोई काम ही नहीं है। अब यदि शरीरका भी काम नहीं है तो अन्य संयोगोंका तो काम ही क्या है? जबकि शरीर तो एक क्षेत्रावगाही है तो दूर क्षेत्रवर्ती पदार्थोंका तो कोई काम ही नहीं है। सीधी बात है। चैतन्यका कार्य चैतन्य करे और शरीरका कार्य शरीर करे। यहाँ तो कहते हैं कि शरीरका तो काम नहीं परंतु रागका भी काम नहीं है। ऐसा राग कर, ऐसा शुभराग कर तो तू आत्मप्राप्तिके समीप हो जायेगा - सो बात भी नहीं है। (श्री अध्यात्म सुधा(गुजराती)भाग-८, पन्ना क्र.-३३१)



नया प्रकाशन (सिर्फ गुजराती भाषामें)

'अध्यात्म पिपासा' (भाग-७)

प्रशममूर्ति धन्यावतार पूज्य बहिनश्रीकी तत्त्वचर्चाका ग्रंथ 'स्वानुभूतिदर्शन' पर अध्यात्मयोगी पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचनोंकी श्रृंखला 'अध्यात्म पिपासा' भाग-७ (केवल गुजरातीमें) पूज्य भाईश्री की ९४ वीं जन्म जयंतिके अवसर पर दि : १७-१२-२६ को प्रकाशित किया जायेगा। जो मुमुक्षु गुजराती भाषासे परिचित हों और इसके स्वाध्यायके लिये इच्छुक हों वे अपनी प्रत दि: ३०-१०-२६ तक रजिस्टर करवा लें।

- श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट

श्री नीरव वोरा ९८२५०५२९१३

आभार

'स्वानुभूतिप्रकाश' (अगस्त-२०२६, हिन्दी एवं गुजराती) के इस अंककी समर्पणराशि

श्री विराग अजीतभाई शाह, भावनगर

की ओरसे ट्रस्टको साभार प्राप्त हुई है।

अतएव यह पाठकोंको आत्मकल्याण हेतु भेजा जा रहा है।

ज्ञानीमें भी असाधारण ज्ञानी ऐसे पूज्य बहिनश्री!!

विविध प्रवचनके दौरान पूज्य बहिनश्रीके प्रति भक्तिपूर्ण हृदयोदगार!!

- सौम्यमूर्ति पूज्य भाईश्री शशीभाई



(उनकी) जन्मजयंतिके प्रसंग पर खास करके जब हीरेसे बधाई की शुरूआत हुई तो वह बात उन्हें पसंद नहीं थी। और तो और यह शुरूआत पूज्य 'गुरुदेवश्री'की उपस्थितिमें शुरू हो गई इसलिये वह भी उन्हें पसंद नहीं आती थी। लेकिन फिर जब 'गुरुदेवश्री'की आज्ञा हो गई फिर एक ऐसा प्रकार था कि 'सारे विकल्पोंका पूर्णविराम'। इनके सामने कोई विकल्प नहीं। 'गुरुदेवश्री'के विकल्पके सामने फिर कोई विकल्प नहीं – यह उनकी विशेषता है।

(प्रवचनांश...श्री'बहिनश्रीके वचनामृत' बोल-१६७, दि.१९-७-८७, श्री'अध्यात्म सुधा' (गुजराती) भाग-५, पन्ना क्र.-३२)

*

पूज्य 'गुरुदेवश्री'ने (बहिनश्रीके वचनामृतकी) विशेषरूपसे प्रशंसा की है इसके कुछएक कारण ऐसे हैं कि जो बात महान परमागमोंमे से सीधी मिलनी मुश्किल है ऐसी बातें सीधी अपने स्वानुभवमें से निकालकर कही हैं। इसलिये 'गुरुदेवश्री' कहते थे कि यह आगम है, यह परमागम है, यह जिनवाणी है।

(प्रवचनांश...श्री'बहिनश्रीके वचनामृत' बोल-१९५, दि.३०-९-८७, श्री'अध्यात्म सुधा' (गुजराती) भाग -५, पन्ना क्र.-४६५)

*

'बहिनश्री'की चर्चाका यह एक ग्रंथ है। नाम 'स्वानुभूतिदर्शन' दिया है। 'बहिनश्री'के विषयमें थोड़ा संक्षिप्त परिचय नये भाईयों-बहिनोंको देखते हुए जरूरी लगता है। क्योंकि उनकी चर्चा हमने अपने स्वाध्यायमें ली है।

वे एक छोटी उम्रमें पूर्वके आराधक व संस्कारी जीव थे जिन्होंने इस भवमें धार्मिक क्षेत्रमें झुकाया। पूर्वके आराधक थे। उन्हें 'कृपालुदेव'को जैसे सात सालकी उम्रमें जातिस्मरण ज्ञान हुआ वैसे इनको १९९४में यानी कि २३ वर्षकी आयुमें जातिस्मरण ज्ञान हुआ था। अतः

इन्हें भी पूर्वभव इत्यादिका ख़्याल आया। अपना आराधकपना ख़्यालमें आया। हालाँकि इसके पहले ही करीब आठ साल पहले उनके विचारोंमे ऐसा था कि संसारक्षेत्रमें आगे न बढ़े और आत्मकल्याण कर लें, इन विचारोंकी फलश्रुति अपने परिणामोंके झुकावको बदल डाला।

बचपनसे बहुत वैरागी थे। शान्त थे। और १८ सालकी उम्रमें उन्हें आत्मज्ञानकी प्राप्ति हुई थी। १५ सालकी उम्रमें गृहत्याग किया। तीन सालके धार्मिक अभ्यासके पश्चात् पूज्य 'गुरुदेवश्री'के निमित्तसे उन्हें १८ सालकी उम्रमें आत्मज्ञानकी प्राप्ति हुई और तत्पश्चात् करीब ६० साल साधनामें बिताये। ७८ वर्षकी आयु पर स्वर्गवास हुआ। १८ सालकी उम्रमें आत्मज्ञान हुआ है तो मानों करीब ६० सालके करीब, आधे शतकसे ज़्यादा छ दशक उन्होंने साधनामें बिताये। भीतरमें साधना की।

आखिरके वर्षोमें मुमुक्षु समाज इनके पास आता था तब वे चर्चा करते थे। उन दिनों सेहतकी कमज़ोरीके कारण करीब २०-२५ मिनट चर्चाके लिये दे सकते थे। दोपहर एक से डेढ़के बीचमें ये चर्चाएँ चलती थी। कभी-कभी इसके बादमें भी कोई-कोई बहिनें इनके संपर्कमें रहती थी तो इनके साथ भी चर्चाएँ चलती थी। इन सबकी टेप रेकोर्डिंगकी जाती थी। उन टेप रेकोर्डिंग हुई चर्चाओंसे इस ग्रंथका संपादन हुआ है।

'कृपालुदेव' असाधारण ज्ञानी हो गये। उन्हें भी साधनाके फलमें लब्धि प्रकट हुई थी। वैसा ही 'बहिनश्री'के बारेमें है। बहुत similar case है। 'कृपालुदेव'ने गृहस्थ जीवनमें प्रवेश किया था, 'बहिनश्री'ने प्रवेशके पश्चात् गृहस्थ जीवन तुरंत छोड़ दिया था और उसमें वे रहे नहीं। १५ सालकी उम्रमें ही छोड़ दिया। हालाँकि वे भी एक लब्धिधारी महात्मा हो गये, साधनाके बलसे उन्हें भी कुछएक लब्धियाँ प्रकट हुई थी। कहनेका तात्पर्य इतना कि इस कालमें वे असाधारण ज्ञानी थे। ज्ञानियोंमें भी असाधारण ज्ञानी! बहुत सरल भाषामें ज्ञानियोंके हृदयकी पारमार्थिक व रहस्यमय बातें अपने अंतर अनुभवसे उन्होंने प्रकट की हैं - ऐसा कहना योग्य है।

(श्री स्वानुभूतिदर्शन प्र. क्र.-४२८, दि.-२९-८-१९९७, प्रश्न क्र.-६५४)

*

'बहिनश्री'के बोलनेके विषयमें थोड़ा विचार चल गया था। उनके परिचयसे ध्यान गया कि बहुत कम बोलते हैं। बोलते हैं बहुत कम परंतु निष्कर्षरूप बोलते हैं। अतः क्या होता है कि वे अपने विचारको विस्तार कर-करके नहीं कहते - सीधा विचारोंका निष्कर्ष दे देते हैं। यानीकि यदि उन्हें समझना हो तो उनके दिये हुए निष्कर्षके पीछे उनकी वैचारिक भूमिका कितनी गहन और विशाल होगी यह समझना आवश्यक है जब तो उनकी सच्ची महत्ता आयेगी, उनकी महिमा आयेगी। ऐसी उनकी बोलनेकी पद्धति थी।

(श्री स्वानुभूतिदर्शन प्र. क्र.-३२५, दि.-१६-१०-१९९८, प्रश्न क्र.-३८६)



चैतन्यकी भावना कभी निष्फल नहीं जाती!

'बहिनश्रीके वचनामृत'में से भावना विषयक चुने हुए अनमोल रत्न

चैतन्य को चैतन्यमें से परिणमित भावना अर्थात् राग-द्वेषमें से नहीं उदित हुई भावना – ऐसी यथार्थ भावना हो तो वह भावना फलती ही है। यदि नहीं फले तो जगत को – चौदह ब्रह्माण्ड को शून्य होना पड़े अथवा तो इस द्रव्य का नाश हो जाय। परंतु ऐसा होता ही नहीं। चैतन्य के परिणाम के साथ कुदरत बँधी हुई है – ऐसा ही वस्तु का स्वभाव है। यह अनंत तीर्थंकरों की कही हुई बात है। २१

*

आत्मार्थीको स्वाध्याय करना चाहिये, विचार-मनन करना चाहिये; यही आत्मार्थीकी खुराक है। २४

*

चैतन्य की भावना कभी निष्फल नहीं जाती, सफल ही होती है। भले ही थोड़ा समय लगे, किन्तु भावना सफल होती ही है ५५

*

प्रत्येक प्रसंगमें शान्ति, शान्ति और शान्ति ही लाभदायक है। ६७

*

रोगमूर्ति शरीरके रोग पौद्गलिक हैं, आत्मासे सर्वथा भिन्न हैं। संसाररूपी रोग आत्माकी पर्यायमें हैं; 'मैं सहज ज्ञायकमूर्ति हूँ' ऐसी चैतन्यभावना, यही मनन, यही मंथन, ऐसी ही स्थिर परिणति करनेसे संसाररोगका नाश होता है। ९२

*

यदि वर्तमानमें ही चैतन्यमें सम्पूर्णरूपसे स्थिर हुआ जा सकता हो तो दूसरा कुछ नहीं चाहिये ऐसी भावना सम्यग्दृष्टिको होती है। १०३

*

चैतन्यद्रव्य पूर्ण निरोग है। पर्यायमें रोग है। शुद्ध चैतन्यकी भावना ऐसी उत्तम औषधि है जिससे पर्यायरोग मिट जाये। शुद्ध चैतन्यभावना वह शुद्ध परिणमन है, शुभाशुभ परिणमन नहीं है। उससे अवश्य संसार-रोग मिटता है। वीतराग देव तथा गुरुके वचनामृतोंका हार्द समझकर शुद्ध चैतन्यभावनारूप उपादान-औषधका सेवन किया जाय तो भवरोग मिटता है; इसलिये



वीतरागके वचनामृतोंको भवरोगके निमित्त-औषध कहे गये हैं। १६४

*

अंतरात्मा तो दिन और रात अंतरंगमें आत्मा, आत्मा और आत्मा – ऐसा करते-करते, अंतरात्मभावरूप परिणमते-परिणमते, परमात्मा हो जाता है। २२४

*

साधना करनेवालेको कोई स्पृहा नहीं होती। मुझे दूसरा कुछ नहीं चाहिये, एक आत्मा ही चाहिये। इस क्षण वीतरागता होती हो तो दूसरा कुछ ही नहीं चाहिये परन्तु अंतरमें नहीं रहा जाता, इसलिये बाहर आना पड़ता है। अभी केवलज्ञान होता हो तो बाहर ही न आयें। २६३

*

चैतन्यकी गहरी भावना तो अन्य भवमें भी चैतन्यके साथ ही आती है। आत्मा तो शाश्वत पदार्थ है न? ऊपरी विचारोंमें नहीं परन्तु अंतरमें मंथन करके तत्त्वविचारपूर्वक गहरे संस्कार डाले होंगे तो वे साथ आयँगे।

'तत्प्रति प्रीतिचित्तेन येन वार्तापि हि श्रुता।
निश्चितं स भवेद्भव्यो भाविनिर्वाणभाजनम्।।'

जिस जीवने प्रसन्नचित्तसे इस चैतन्यस्वरूप आत्माकी बात भी सुनी है, वह भव्य पुरुष भविष्यमें होनेवाली मुक्तिका अवश्य भाजन होता है। २८९

*



(पूज्य बहिनश्री) गणधरका जीव हैं, इसलिये भविष्यमें वे बारह अंगकी रचना करेंगे। बहिनश्रीकी नज़र बहुत सूक्ष्म थी जैसे कि वर्तमान समाजको वास्तवमें क्या देना ज़रूरी है, यह उनके ज्ञानमें बहुत आया है। उनके वचनामृत प्रसिद्ध हुए तब गुरुदेव फिदा हो गये!



आफरीन हो गये! एक-एक बोलमें अकेला अध्यात्मका अमृत भरा है ऐसा कहना होगा। ...भावनाका विषय प्रस्थापित करके तो उन्होंने जैसे फ़ैसला ही कर दिया है। मुमुक्षुओंको तो जैसे एक रत्न ही हाथमें आ गया ऐसा कहना होगा।

– पूज्य भाईश्री शशीभाई



'दृष्टिका परिणमन और दृष्टिका विषय'

– 'द्रव्यदृष्टि प्रकाश' – पूज्य निहालचंद्रजी सोगानी

(द्रव्यदृष्टिके ज़ोरमें :) **केवलज्ञानसे भी हमारे प्रयोजन नहीं; मोक्षसे भी प्रयोजन नहीं; वो तो हो ही जाता है। १३.**

*

परिणाम अपना है; तो भी उसको आप ख़ुद ही (कर्ताबुद्धिसे) **पलट नहीं सकते। परिणाममें कर्ता-कर्मपनेका धर्म है, इसलिए वो तो पलटेगा ही। जब दृष्टि बाहर झुकी है; दृष्टिका प्रसार अपनेको छोड़कर बाहरमें है; तो परिणाम भी बाहर झुकेगा। और यदि दृष्टि अपने स्वभावकी ओर है, तो परिणाम भी अपनी ओर झुकेगा।**

अपनेको तो परिणाम भी पलटाना (फेरफार करना) **नहीं है। 'मैं' अपरिणामी हूँ और पलटना मेरा धर्म ही नहीं है; वह तो परिणामका धर्म है। दृष्टिकी अपेक्षासे शुद्धपरिणाम भी मेरेसे अलग ही है; ज्ञान उसको अपना अंश जान लेता है। १९.**

*

'मैं स्वयं ही वर्तमानमें भगवान हूँ' – (इसमें) **भगवान होना भी क्या है ?.... अपने स्वभावमें दृष्टिका प्रसार होते, पर्याय मेरी ओर झुकते-झुकते, पर्यायमें केवलज्ञान – सिद्धदशादि होती ही है; परंतु मुझे तो इससे भी प्रयोजन** (दृष्टि) **नहीं है। २३.**

*

विभाव तो मेरेसे बहुत दूर है। यहाँ तो परिणाम (शुद्धपर्याय) **भी मेरेसे भिन्न है। 'मैं तो अपरिणामी हूँ' – एक समयके परिणामके साथ नहीं बहता। २६.**

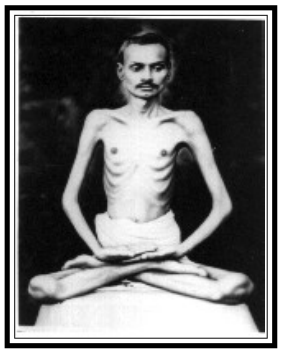
*

'मैं' (त्रिकाली) **परिणाममें नहीं जाता।** (त्रिकाली स्वभावमें अपनापन होनेसे) **परिणाम सहज ही मेरी ओर आता है। २९.**

*

'मैं वर्तमानमें ही परिपूर्ण हूँ, कृतकृत्य हूँ, मुझे कुछ करना-धरना ही नहीं है' – ऐसी दृष्टि होनेपर, परिणाममें आनंदका अंश प्रकट होता है; और बढ़ते-बढ़ते पूर्णता हो जाती है। ३०.

*



- परम कृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रजी

राजहृदय

पत्रांक – ४०५

बंबई, भादों सुदी १०, गुरु, १९४८

इस क्षणपर्यंत आपके प्रति किसी भी प्रकारसे पूर्वादि कालमें मन, वचन, कायाके योगसे जो जो अपराधादि कुछ हुए हों उन सबको अत्यंत आत्मभावसे विस्मरण करके क्षमा चाहता हूँ। भविष्यके किसी भी कालमें आपके प्रति वैसा प्रकार होना असंभव समझता हूँ, ऐसा होनेपर भी किसी अनुपयोगभावसे देहपर्यंत वैसा प्रकार क्वचित् हो तो इस विषयमें भी इस समय अत्यंत नम्र परिणामसे क्षमा चाहता हूँ; और उस क्षमारूप भावका, इस पत्रको विचारते हुए, वारंवार चिंतन करके आप भी, हमारे प्रति पूर्वकालके उन सब प्रकारका विस्मरण करने योग्य हैं।

कुछ भी सत्संगवार्ताका परिचय बढ़े, वैसा यत्न करना योग्य है। यही विनती।

रायचंद।

*

पत्रांक–४०६

बंबई, भादों सुदी १२, रवि, १९४८

परमार्थके शीघ्र प्रगट होनेके विषयमें आप दोनोंका आग्रह ज्ञात हुआ; तथा व्यवहारचिंताके विषयमें लिखा, उसमें भी सकामताका निवेदन किया, वह भी आग्रहरूपसे प्राप्त हुआ है। अभी तो इन सबके विसर्जन करनेरूप उदासीनता रहती है; और उस सबको ईश्वरेच्छाधीन करना योग्य है। अभी ये दोनों बातें हम फिर न लिखें तब तक विस्मरण करने योग्य हैं।

यदि हो सके तो आप और गोशलिया कुछ अपूर्व विचार आये हो तो वे लिखियेगा। यही विनती।

*

पत्रांक–४०७

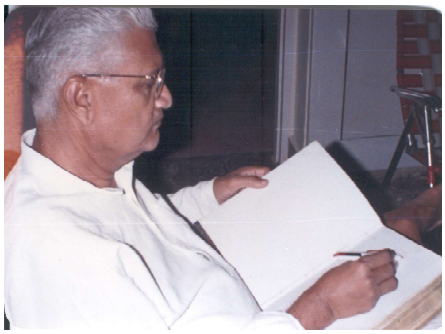
बंबई, भादों वदी ३, शुक्र, १९४८

शुभवृत्तिसंपन्न मणिलाल, भावनगर।

वि. यथायोग्यपूर्वक विज्ञापन।

आपका एक पत्र आज पहुँचा है, और वह मैंने पढ़ा है। यहाँसे लिखा हुआ पत्र आपको मिलनेसे जो आनंद हुआ उसका निवेदन करते हुए आपने अभी दीक्षासंबंधी वृत्ति क्षुभित होनेके विषयमें लिखा,

(अनुसंधान पृष्ठ संख्या ०७ पर..)



अदृश्यको दृश्य कौन करता है?

- सौम्यमूर्ति पूज्य भाईश्री शशीभाई

अदृश्य (आत्मस्वभाव)को दृश्य करनेके मूलमें भावना है। नहीं दिखने, नहीं समझनेके पीछे कारण अपने भावोंकी मलिनता है। जिस मलिनताके वश ज्ञानदर्पण मलिन हो चुका है। फिर भी लगा हुआ मैल निकल सकता है। मैल और ज्ञान एक नहीं हो गये। मैलको धोया जा सकता है और भावना है वह इसका साबुन है। (श्री अध्यात्म सुधा(गुजराती) भाग-८, पन्ना क्र.-३२३)

*

अनादि विभावरसके कारण जो परिणति बन चुकी है उस परिणतिमें रहे मैलको, जमी हुई गंदगीको निकालनेका कार्य, जब तक आत्माकी शक्ति प्रकट नहीं हुई है तब तक भावना वह कार्य करती है। सर्वप्रथम सफाईका कार्य भावना करती है।

(श्री अध्यात्म सुधा(गुजराती) भाग-८, पन्ना क्र.-३२७)

*

मुमुक्षु :- भावनाका (प्रकरण) पूज्य बहिनश्रीने बहुत सुंदर (प्रसिद्ध किया है।)

पूज्य भाईश्री :- गज़बका कार्य किया है! मुमुक्षुओंकी अनेक प्रकारकी विभिन्न प्रकारकी उलझनोंकी एक मास्टर की जैसा उत्तर देते हैं। कोई कहाँ उलझता है तो कोई कहाँ उलझता है, कोई कहेगा कि कुछ सूझता नहीं है मार्ग सूझता नहीं है, तत्त्वदर्शन नहीं हो रहा है, किसीको कुछ। कोई कहेगा याद नहीं रहता है तो कोई कहेगा शास्त्रवांचनमें अब आँखें काम नहीं करती हैं तो किसीके श्रवणके लिये कान काम नहीं करते हैं, ये वृद्धावस्थामें इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं न! किसीको आँखमें मोतियाबिंद आता है, किसीके कान गये, किसीका कुछ, किसीकी स्मरणशक्ति कमज़ोर हो जाती है। किसीको शरीरके अनेक प्रकारके रोग और अशक्ति हो जाती हैं, लगता है कि, अब क्या करें आगे बढ़ने के लिये? शरीर साथ नहीं दे रहा है-ऐसा कहते हैं। (इनको कहते हैं कि) किसी भी हालातमें तुम अपने स्वरूपकी भावना तो कर ही सकते हो! बस! इसे वृद्धिगत करते जाओ! सीधा सरल उपाय बतलाया है - इससे अधिक सरल उपाय और क्या हो सकता है। किसी भी द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावमें हो सकता है - ऐसी बात है।

मुमुक्षु :- इस कार्यमें शरीरकी तो ज़रूरत ही नहीं है।

पूज्य भाईश्री :- इस कार्यमें शरीरका कोई काम नहीं है सच बात तो यही है कि इस कार्यमें शरीरका

(अनुसंधान पृष्ठ संख्या ११ पर..)

'स्वानुभूतिप्रकाश' पत्रिका सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना

जयजिनेन्द्र! इससे यह सूचित किया जाता है कि 'स्वानुभूतिप्रकाश' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका हिन्दी/गुजरातीमें पिछले २८ सालसे आपके स्वाध्याय हेतु भेजी जा रही है। अब इसे काफ़ी समय होनेसे कई पते बदल चुके हो या पत्रिकाका सदुपयोग न होकर किसी भी प्रकारकी असातना होनेकी संभवितताको देखते हुए यह पत्रिकाको आगे प्राप्त करनेके इच्छुक सभी मुमुक्षुओंको पुनः अनिवार्यरूपसे अपने पतेका registration करवाना होगा – ऐसा ट्रस्ट द्वारा नक्की किया गया है।

इसके तहत आगामी अक्टूबर–२०२६ तककी समयसीमामें अपने पतेकी पूरी जानकारी नीचे दिये गये फॉर्ममें लिखकर इसकी फ़ोटो हमारे whats app नं. ९४०८३०३१५२ पर भेजना होगा। नवम्बर–२०२६ से केवल पुनः registered पते पर यह पत्रिका भेजी जायेगी। जो मुमुक्षु अपना registration नहीं करवायेंगे उन्हें इस पत्रिकाकी उपयोगिता एवं आवश्यकता नहीं है यह समझकर उन्हें यह पत्रिका नहीं भेजी जायेगी। कृपया इस बातको ध्यानमें लेंवे।

आपको हार्ड कॉपी या pdf file या दोनों – जिसकी भी आवश्यकता हो उसे बॉक्समें टिक करें।

–प्रबंध ट्रस्टी
श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट

हार्ड कॉपी ☐ pdf फ़ाइल ☐

वर्तमान रजिस्टर्ड नं. :– _____

नाम :– _____

पता :– _____

_____

पिनकोडः– _____

मोबाइल नं :– _____

REGISTERED NO. : BVHO - 253 / 2024-2026
RENEWED UPTO : 31/12/2026
R.N.I. NO. : 70640/97
Title Code : GUJHIN00241
Published : 10th of Every month at BHAV.
Posted at 10th of Every month at BHAV. RMS
Total Page : 20

'सत्पुरुषों का योगबल जगत का कल्याण करे'



... दर्शनीय स्थल...

श्री शशीप्रभु साधना स्मृति मंदिर
भावनगर

स्वत्वाधिकारी श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री नीरव धर्मेन्द्र वोरा द्वारा अजय ऑफसेट, १२-सी, बंसीधर एस्टेट, बारडोलपुरा, अहमदाबाद - ३८० ०१६ से मुद्रित एवं १९४२ - बी, शशीप्रभु मार्ग, रूपाणी, भावनगर - ३६४ ००१ से प्रकाशित ।

संपादक : श्री नीरव धर्मेन्द्र वोरा - 98250 52913

Printed Edition : **3455**
Visit us at : http://www.satshrut.org

If undelivered please return to ...

Shri Shashiprabhu Sadhana Smruti Mandir
1942/B, Shashiprabhu Marg, Rupani,
Bhavnagar - 364 001

mayur 9374825041